विसर्जन

कथा विसर्जन होत है, सुनहु वीर हनुमान
राम लखन श्री जानकी, सदा करहु कल्याण
एक घड़ी आधी घढ़ी, आधी में पुनि आध
तुलसी संगत साधु की, कटै कोटि अपराध
जो जन जहां से आयहु, कथा सुनेहु मन लाय
अपने अपने धाम को विदा होहु हरषाय
श्रोता सब आश्रम गये, शंभु गये कैलाश
रामायण मम हृदय में, आय करहु तुम बास
कहेहु दन्डवत प्रभु सन, तुमहि कहौं कर जोरि
बार बार रघुनाथ कहिं, सुरति करायहु मोरि
बार बार वर मांगहु, हर्षि देहु श्री रंग
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग
जाहु पवन सुत शयन करो, मानस भई विश्राम
नाथ तुम्हारे दास को सिद्ध भयेसब काम
हरि शरनन गुरु शरनन, शरनन गौरि गणेश
तुलसी दास प्रभु के शरनन, शरनन अवध नरेश
राम लखन श्री जानकी, भरत शत्रुघन भाय
कथा विसर्जन करतु हौं, ईशर्हि शोश नवाय
साधु सन्त को बन्दगी, ब्राह्मन को परणाम
श्रोता गण कर जोरि कर, सब को सीताराम

Shaanti Paat

ॐ द्यौ शांति रंतरीक्षा गवं: शांति

पृथ्वी शांति रापह शांति

रोशधयह शांति वनस पतयह शांति

विश्वेद देवः शांति ब्रह्मा शांति

सर्वगवंग शांति

शांति रेवा शांति सा मा शांति रेधी

ॐ शांति शांति शांति

पंचामृत दोहा

राम कहे सुख उपजे, कृष्ण कहे दुख जाए

महिमा मह प्रसाद की, पावे भोग लगाए